

विचार बिन्दु

प्रकृति ईश्वर का प्रकट रूप है, कला मानुष्य का। —लांगफैलो

आयुर्वेद की वसंत ऋतुचर्या

एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि आयुर्वेद में ऋतुचर्या किन सिद्धांतों को ध्यान में रखकर तय की गयी होगी? लगभग 5000 साल पहले तय की गयी ऋतुचर्या क्या आज भी उपयोगी है? पहले बात यह है आयुर्वेद का लोक-पुरुष-साम्य सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि पुरुषलोक के समान है (च.शा.5.3:पुरुषोऽयं लोकसम्मितः) इस सिद्धांत के प्रकाश में देखने पर लोक या पृथ्वी के वातावरण का सीधा-सीधा प्रभाव मानव के स्वास्थ्य पर पड़ता है क्योंकि लोक और पुरुष में समानता (च.शा.5.3:लोकपुरुषयोः सामान्यम्) होने से सामान्य-विशेष का सिद्धांत कार्य करता है। अर्थात् सामान भावों को सामान भावों से मिलाने पर उस भाव की वृद्धि और असमान भावों को मिलाने पर ह्रास होता है। सत्य बुद्धि तभी प्रकट होती है जब स्वयं के अंदर प्रकृति को व प्रकृति के अंदर स्वयं को देखा जाये (च.शा.5.7): सर्वलोकामन्यात्मन्यं च सर्वलोक सममनुपपन्नतः सत्या बुद्धिः समुत्पद्यते। यहाँ पर लोक से तात्पर्य पूरी दुनिया के वातावरण से है जिसमें छः धातुएँ पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश तथा आत्मा शामिल हैं (च.शा.5.7): षड्धातुसमुदायोः सामान्यतः सर्वलोकः। इस सूची में आत्मा का शामिल होना आश्चर्यजनक नहीं मानना चाहिये क्योंकि पौधे, प्राणी और सम्पूर्ण जीवन भी लोक में शामिल हैं। जिस प्रकार चंद्रमा, सूर्य, और वायु क्रम से विराग, आदान, विक्षेप क्रियाओं से जनत का धारण करते हैं, ठीक उसी प्रकार सोमांसक कफ, सूर्य जैसा पित्त, तथा वायु देह का धारण करते हैं (सु.सू.21.8): विरागोदानविक्षेपैः सोमसूर्यानाला यथा। धारयन्ति जगद्देहं कफपित्तानालास्तथा।

इन आयुर्वेदिक सिद्धांतों को आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा जाये तो पर्यावरण और पारिस्थिक तंत्र के साथ मानव के रिश्तों की अनवरत सार-संभाल या अनुकूलन ही ऋतुचर्या है। इसे साधारण शब्दों में यों समझें कि यदि हवा, पानी, तापक्रम, मिट्टी, पेड़-पौधों में ऋतु के अनुसार परिवर्तन होते हैं तो हमें भी उसके अनुसार जीवन-शैली और खान-पान और पहनावे में परिवर्तन करना पड़ता है। यह परिवर्तन या अनुकूलन ही धातुसाम्य रखता है। यही अनागत रोगों का प्रतिकार या विकार-अनुत्पत्ति में सहायक है।

आयुर्वेद में वसंत ऋतुचर्या का बड़ा रोजक वर्णन है जो आधुनिक आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टि से बहुत साम्यता रखता है। वनों और उपवनों में जहाँ ठण्डी हवा, जल से भरे हुये तालाब, विविध प्रकार की जैव-विविधता वाले पुष्प-वृक्षों की प्रजातियाँ एवं विविध प्रजातियों के पक्षियों की कलवर ध्वनि हो, वहाँ साम्य बिताने के लिये वसन्त ऋतु सर्वोत्तम है। आधुनिक वैज्ञानिक शोध में उपवन, ग्रीन स्पेस, पार्क या गार्डन्स के स्वास्थ्ययोगी प्रभाव पर पूरी दुनिया में बहुत शोध हुये हैं। प्राकृतिक-तन्त्रों, वनों एवं जैव विविधता क्षेत्रों में स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव पर सबसे प्राचीन निष्कर्ष चरकसंहिता, सुश्रुतसंहिता और अष्टांगहृदय में उपलब्ध है।

आइये चरकसंहिता में वसंत की आरोग्यदायी ऋतुचर्या का वर्णन देखते हैं: सन्दर्भ (च.सू.6.22-26): वसन्ते निश्चितः श्लेष्मादिनक्रुद्धाभिरीरुतः। कार्याग्निं बाधते रोगास्तितः प्रकुरुते बद्धम्। तस्माद्वासने कर्माणि वमनादीनि कारयेत्। गुर्वस्त्वनिग्धमधुं दिवास्वन्नं च वर्जयेत्। व्यायामोद्धर्तनं धूमं कवलग्रहभक्षणम्। सुखाब्जना शौचविधिं शीलयेत् कुसुमगामे। चन्दनागुदुदिग्धाड्यो यवगोधूमभोजनः। शारधं शाकमेण्यं मांसं तालकपिण्डलम्। भक्षयेन्निरिद्रं सौधुं पिबेन्मातृकामेव वा। वसन्तेऽनुभवत् स्त्रीणां काननानां च यौवनम्। तात्पर्य यह है किहेमन्त तथा शिशिर ऋतु में शरीर में संचित कफ, वसन्त ऋतु में सूर्य की गर्मी से कुपित होकर, जाटयानि को बाधित करता है। जिसके कारण कफज व्याधिषु उत्पन्न हो सकती हैं। अतः कफ को निकालने के लिये वसन्त ऋतु में शिरोचिरेचन, वमन, कवल-घाण आदि का प्रयोग करना स्वास्थ्य के लिये लाभकारी रहता है। इसके साथ ही उबन्त, गुनगुने पानी का प्रयोग, उद्यानों एवं वनों में घूमना, पैदल चलना तथा शारीरिक व्यायाम भी वसन्ती-ऋतुचर्या के उपयोगी आयाम हैं। पुष्पित पल्लवित वनों में इनका अर्धभ्रम लेना चाहिये।

वसन्त ऋतु में बहुत मीठा, स्निग्ध, अम्ल, देर से पचने वाले गुरु आहार तथा दिन में सोना ठीक नहीं रहता। इसका मूल कारण यह है कि हेमन्त और शिशिर ऋतु में संचित कफ अपने आप में एक समस्या है, और यदि कफ वृद्धि करने वाले ये सभी कार्य किये जायें तो आगे चलकर बीमार होने की आशंका रहती है।

वसन्त ऋतु में खाद्य पदार्थ के रूप में सबसे उत्तम जौ, गेहूँ, शहद, ईख, अंगूर आदि उत्तम हैं। आवश्यकतानुसार वैद्यों की सलाह से अंगूर या महवा से बने हुये स्वच्छ औषधीय-आसव व अरिष्ट वसन्त ऋतु में लिये जा सकते हैं। साठो के चावल, शीत द्रव्य, मूंग, निवारी के चावल, कोदो तथा मूंग की दाल के सूप, गेहान, पटोल आदि तिक्त रस वाले द्रव्यों का उपयोग उत्तम रहता है। वसन्त ऋतु में तीक्ष्ण, रुक्ष, कटु, क्षार, कषाय रस वाले पदार्थों में जौ, मूंग और मधु मिलाकर भोजन के रूप में लेना उपयोगी है।

वसंत ऋतु में बासंतिक वमन या वैद्य की सलाह से अगर आवश्यक हो तो पंचकर्म भी लिया जा सकता है। तमाम रोगों के विरुद्ध पंचकर्म और इसकी घटक क्रियाओं की विशाल प्रयोज्यता और उपयोगिता है। जब रोगों के उपचार या स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की बात आती है, तो आयुर्वेदिक पंचकर्म के टकरकी और कोई विधि नहीं है।

सभ्यताओं के विनाश काल में भी, अगर आदमी मौत के मुंह में जाने का काम ही न कर रहा हो, तो पंचकर्म सबसे दुरुस्त चिकित्सा है (च.वि.3.13): येषां न मृत्युसामान्यं सामान्यं न च कर्मणाम्। कर्म पञ्चिधं तेषां भेषजं परमुच्यते। वसंत ऋतु में आप पंचकर्म या ऋतुचर्या के अनुसार कम से कम पंचकर्म का एक घटक-वमन-के प्रयोग के बारे में सोच सकते हैं। पर आपको अपने आयुर्वेदाचार्य से सलाह लेकर यह तय करना होगा कि क्या आपको सचमुच पंचकर्म की आवश्यकता है या नहीं। पंचकर्म से स्वास्थ्य को यथावत बनाये रखने और उग्र-आधारित रोग-जनन को दूर रखने में मदद मिलेगी।

पंचकर्म वैसे तो शारीरिक-मानसिक शोधन और रोग शमन दोनों में मददगार है, पर पहली बात यह है कि यदि आप बार-बार बीमार होकर दवाओं में अपना धन नष्ट नहीं करना चाहते, तो पंचकर्म उपयोगी है। बीमारी में धन की बर्बादी के साथ जो शारीरिक-मानसिक पचडा-पेशानी होती है वह तो अतिरिक्त है। अतः सदैव स्वस्थ बने रहने के लिये साल में एक बार पंचकर्म करना सबसे उपयुक्त है।

दूसरी बात यह है कि सभ्य चिकित्सा इकाई में कोई नहीं भरना चाहता। दीर्घ-काल तक, या कहिये जीवन के अंतिम दिन तक, स्वस्थ रहना है तो आयुर्वेद के रसायन बड़ी मदद करते हैं। पर बिना शोधन क्रिया कराये रसायनों को लेने का मतलब वैसा ही है जैसे। कार्मिक को रंगाना। रसायन उग्र-आधारित रोग-जनन रोकने या दर्द-निवारण में तभी सक्षम होते हैं जब पहले शोधन कार्या जायें। नियमानुसार पंचकर्म, रसायन और वाजीकर का प्रयोग करने से धातुसाम्य बना रहता है, रोग नहीं होते, धातुएँ बढ़ती हैं इसलिये बूढ़े होने की गति धीमी हो जाती है (च.सू.7.48-49): यथाकर्म यथायोग्यत ऊर्ध्वं प्रयोज्येता रसायनानि सिद्धानि वृष्ययोगांश्च कालवित्। रोगास्तथा न जायन्ते प्रकृतिस्थेषु धातुषु। धातवश्चापिर्वर्धन्ते जरा मान्यमुपैत च।

तीसरी बात यह है कि वैसे तो पंचकर्म की कुछ क्रियाएँ दिनचर्या और ऋतुचर्या का अंग हैं, पर हम प्रायः उन्हें भुला देते हैं। जीवन भागदड़ हो गया है। जीवनशैली त्रिदोष-भडकाऊ हो गयी है। प्रज्ञापरक और असात्वन्दिश्या संयोग हमारी आदत हो गये हैं। हमारा समय त्रिदोष-भडकाऊ काल है। ऐसी स्थिति में अनेक रोगों की रोगों की शुरुआती अवस्था दिखने लगती है, तब होश आता है कि पंचकर्म तो हमारे लिये ही है।

ऋतुचर्या में पंचकर्म की क्रियाएँ तो उपयोगी हैं ही, पर साथ ही आयुर्वेद का सिद्धांत यह है कि बहुदोष के लक्षण दिखें तो समझिये पंचकर्म की आवश्यकता निश्चित रूप से है। तात्पर्य यह समझिये कि अपच, आहार-अरुचि, मोटापा, पांडुता, मांशपित्त, थकावट, पिंडका कोठ और कंडू (तरह तरह की फुंसियाँ), सन्ध, अरति, आलस, श्रम, कमजोरी, शारीरिक दुर्बल्य, अवसाद, कफ व पित्त का भडकना (उत्कलेश), नींद उड़ जाना या खूब नींद आना, तन्द्रा (अनीदामन या हमेशा सोयते रहना), क्लैश्य, अबुद्धि की स्थिति, उल्टे-पुल्टे सपने आना, और पौष्टिक आहार लेते रहने के बावजूद बल और रंग उड़ना बहुदोष के लक्षण हैं। ऐसे लोगों के लिये पंचकर्म या संशोधन हितकारी होता है। अनुभवों और कुशल चिकित्सक रोगी के दोष स्थिति व बल को समझकर चिकित्सा की सलाह देगा व शोधन कार्यागम (च.सू.16.13-16): अविषाकोऽरुचिः स्वील्यं पाण्डुता गौरवं क्लमः। पिंडकाकोठकण्डूनां सम्भ्रवोऽरतिरेव च। आलस्यश्रमदौर्बल्यं दौर्गन्ध्यमवसादकः। श्लेष्मापित्तसमुत्कलेशो मिद्रानाशोऽतिनिद्रता। तन्द्रा क्लैष्यमबुद्धिक्लमशस्वन्नपदर्शनम्। बलवर्णप्राणशक्त्वं तृप्यते बृंहणीपित्तम्। बहुदोषस्य लिङ्गानि तस्मै संशोधनं हितम्। ऊर्ध्वं चैवानुसोतं च यथादोषं यथाबलम्।

जैसा कि पहले भी मैंने लिखा है, जीवन और मृत्यु के मध्य सत रक्षा दीवारें हैं: आहार, विहार, सद्गुण, स्वस्थवृत्त, पंचकर्म, रसायन/वाजीकर, औषधि। इनमें से शुरू की छः दीवारें स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य-रक्षण में मदद करती हैं। और सभी सात दीवारें या सुरक्षा कवच मिलकर रोगी को स्वस्थ करने में मदद करती हैं। जब आहार, विहार, सद्गुण व स्वस्थवृत्त की सुरक्षा दीवार को ठीक से प्रतिदिन न सम्हाला गया हो तो पंचकर्म की जरूरत पड़ जाती है। इसके बाद, जीवन और मृत्यु के बीच रसायन और औषधि की दीवारें ही शेष बचती हैं।

वसंत ऋतु में मौसमी और वायुरल बीमारियों का भी प्रकोप अब प्रायः दिखाई पड़ता है। इनसे बचने के लिये वैद्यों की सलाह से हल्दी, तुलसी, आमलकी, शूठी, कालीमिर्च, पिप्पली, लहसुन, पुदीना, त्रिकटु, त्रिफला, गुडूची, कालमेघ, चिरायता, वासा, शिठू या सहजान, यष्टिमधु, बिभीतकी, अश्वगंधा, हरीतकी, मुस्ता, पाठा, पुनर्नवा आदि युक्तिपूर्वक लिये जा सकते हैं। परन्तु ध्यान यह रखना है कि कोई भी औषधि वैद्य की सलाह के बिना नहीं लें।

ऋतुचर्या पालन वस्तुतः एक आरोग्यदायी युक्ति है। इस सन्दर्भ में चरकसंहिता का एक संवाद देखिये: "भावनु! क्या लोगों की आयु निश्चित होती है या नहीं (किन्तु खलु भगवन्! नियतकालप्रमाणमायुः सर्वं न ति)?" अनिवेश न पूछा। भगवान्आजैव का उत्तर यहथा: "अनिवेश! समस्त प्राणियों की आयु युक्ति की अपेक्षा करती है (इहानिवेश! भूतानामायुर्विक्रमपेक्षते)।" यहाँसन्देश यह है कि मृत्यु की तिथि तय नहीं है। आयु युक्ति की अपेक्षा करती है। युक्ति से आप स्वस्थ रह सकते हैं। युक्ति से आपकी आयु बढ़ाई जा सकती है। युक्तिपूर्वक वसंत ऋतुचर्या से आनंद लीजिये और स्वस्थ रहिये।

—अतिथि सम्पादक,

डॉ. दीप नारायण पाण्डेय

(इंडियन फारेस्ट सर्विस से सेवानिवृत्त, वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान में विजिटिंग प्रोफेसर। (यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सर्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)



राजेन्द्र मोहन शर्मा

हमारी सामाजिक परम्परा में गालियों का बहुत पुराना इतिहास है। ये एक जरिया भी है जिससे मानव मन के भीतर जमा हुआ गुस्सा, हताशा और अवसाद फूटकर बाहर निकलता है। यानि कि गालियाँ हमारे जीवन की 'सेप्टी वाल्व' होती हैं, जो प्रेशर कुकर में बनी भाप को बाहर निकाल देती हैं और मानवीय धैर्य के कुकर को विस्फोट होने से बचाती हैं। कहते हैं यदि समाज से गालियाँ हटा दी जाएँ, तो समाज बीमार हो जाएगा। कहा सकते हैं कि गालियों को हटा दिया जाए, तो फिर गालियों का डोज दूनी ही तेजी से निकलता है। बात गाली पर हो और शर्त यह कि वह शालीनता की सीमा से बाहर न जाए, यह नट के डोर पर चलने जैसा है। गाली वैचारिक लिहाज से अपनी तारकत दिखाने का जरिया भी है। आपका यह उद्देश्य तभी पूरा हो सकता है, अगर गाली सुनने वाले को बुरी भी लगे। गालियों से हमें यह भी मालूम पड़ता है कि हमारे समाज में किस चीज को बुरा माना जाता है। झगड़े की स्थिति में गाली एक रास्ता देती है। आप बजाए मारा-पीटी करने के, मुँह से कुछ कहकर अपनी नाराजगी व्यक्त कर सकते हैं। यानि गाली लड़ाई का अहिंसक तरीका भी है। अधिकतर गालियाँ यौन अंगों

पहले परंपराओं में ये गाली एक समय विशेष के खांचे में बंधी रहती थी, पर यहाँ तो ये सिलसिला अंतहीन हो गया। अब तो गाली शास्त्रार्थ रुकने का नाम ही नहीं लेता है। गाली पहले इन्सानि प्रवृत्तियों के लिए अनुमत्य थी। पर अब यह व्यक्तियों को दी जाने लगी है। वह भी सिर्फ उन्हें अपमानित करने के लिए। गालियों को स्त्री विरोधी बना देना एक सामाजिक विसांगति है, जो समाज के अधोपतन के साथ प्रचलित हो गई। हम ऐसी बहुत सी गालियाँ बकते हैं जो स्त्री की यौनिकता पर चोट करती हैं। ये पूरी तरह से स्त्री विरोधी गालियाँ हैं। इसमें कोई दो राय नहीं कि गालियों का भी लिंग होता है। गालियाँ समय, स्थान, व्यक्ति पर निर्भर नहीं करती। ऐसे-ऐसे गालीबाज देखें हैं जिनके मुँह से गाली पहले और शब्द बाद में निकलते हैं। कई लोगों के लिए यह जरूरी नहीं कि वह किसी व्यक्ति को ही गाली दें, मंदिर की सीढ़ियों पर टकराकर भी उनके मुँह से गाली निकल जाती हैं। वो आसमान, बरखा, बारिश तक को सूत सकते हैं, किसी स्थान को गाली दे सकते हैं, किसी समय को गाली दे सकते हैं। ऐसी धीमी मान्यता भी है कि जो ज्यादा गाली देते हैं वो दिल के साफ होते हैं। जो नहीं दे पाते वो अंदर-अंदर घुने रहते हैं। आजकल तो गालियाँ भी हैं, स्कूल वाली, कॉलेज वाली ओटीटी पर गालियों की भरमार ने इसे अलग तरह की स्वीकृति दे दी है। तर्क भी बड़े हैं अगर जीवन में गालियाँ हैं तो फिल्में

होली मिलन समारोह आज

हिएडॉन सिटी। राजपूत समाज का होली मिलन व सम्मान समारोह आज शहर के मेला रोड स्थित एक निजी मैरिज होम में आयोजित किया जाएगा। राजपूत समाज के शिवालय सिंह जादौन, सत्यस्वरूप सिंह जादौन, नैथू सिंह राजस्थान, अजय सिंह सोलंकी, के. नरोत्तम सिंह, रामराज सिंह, उम्मेद सिंह, गणेश सिंह रामचन्द्रसिंह, नरेन्द्र सिंह जादौन एडवोकेट, सुषेन्द्र सिंह राजावत, सुनील सिंह जादौन नरेंद्र सिंह जादौन एडवोकेट ने जानकारी देते हुए बताया कि समाज का होली मिलन एवं

सम्मान समारोह रविवार सांय 4 बजे वृंदावन रिसोर्ट महवा रोड में आयोजित किया जावेगा। इस दौरान गोवर्धन सिंह जादौन को भारतीय जनता पार्टी जिला करीली का जिलाध्यक्ष निर्वाचित किये जाने, अजयसिंह जादौन को जिलाध्यक्ष क्रिकेट संघ करीली निर्वाचित होने पर, सीमा जादौन को जिला शिक्षा अधिकारी पद पर पदोन्नति किये जाने पर एवं बाईसा धनवी सिंह पिचानौत के राज्य स्तर पर घुडसवारी प्रतियोगिता में 2 सिकन्टर व 2 कांय्य पदक प्राप्त करने पर सम्मान भी किया जावेगा।

राजस्थान हाईकोर्ट का आदेश कार्मिक को एपीओ करने का कारण भी लिखित में बताना होगा

जोधपुर, (कांस)। राजस्थान हाईकोर्ट ने अपने आदेश में कहा कि एपीओ आदेश केवल राजस्थान सेवा नियमों में उल्लेखित आकस्मिक कार्यों या समान कारणों में ही पारित किया जा सकता है। कार्मिक को एपीओ करने का कारण भी लिखित में बताना जरूरी होगा, अन्यथा आदेश विधि विरुद्ध होगा। मामलों में अधिवक्ता यशपाल खिलेरी ने याचिकाकर्ता डॉ. दिलीप सिंह चौधरी, डॉ. मांगीलाल सोनी, लक्ष्मीनारायण कुम्हार सहित अन्य को और से परेवी की। राजस्थान हाईकोर्ट के न्यायाधीश अरुण मोंगा की एकलपीट से राहत मिली।

भोपालगढ़, जिला जोधपुर के ब्लॉक मुख्य चिकित्सा अधिकारी याचिकाकर्ता डॉ दिलीप सिंह चौधरी

की ओर से अधिवक्ता यशपाल खिलेरी ने रिट याचिका दायर कर बताया कि याचिकाकर्ता वर्ष 2015 से चिकित्सा अधिकारी पद पर नियुक्त होकर छह साल की आवश्यक संतोषजनक सेवा पूर्ण करने के बाद उसे वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी पद पर नियुक्त करते हुए बीसीएमओ, भोपालगढ़ के पद पर नियमानुसार नियुक्त किया गया। लेकिन तीन साल की सेवावधि वाले जूनियर अयोग्य चिकित्सक को उक्त वरिष्ठ पद पर नियुक्त करने की एक मात्र मंशा से याचिकाकर्ता को आदेश दिनांक 19 फरवरी 2024 से एपीओ कर दिया गया, जिसे रिट याचिका दायर कर चुनौती दी गई।

सभी समान एपीओ आदेशों को

श्रीश्यामबाबा भजन समिति

सीकर,। श्रीश्यामबाबा भजन समिति की ओर से शुक्रवार को श्यामभु की विशाल निशान यात्रा नगर के मुख्य मार्गों से निकाली गई। श्यामभक्त रामगोपाल गोपी के सानिध्य में शाम सवा 6 बजे निशान खाटुश्यामजी पहुंच कर बाबा के चरणों में अर्पित किये गए सन्तियों के अध्यक्ष राजकुमार पिपाठी ने बताया कि श्यामभक्त भजन गायक रामगोपाल गोपी, सुनील नैनुखा, वीरेंद्र माधुर, दीपक पटेल, राजेश शर्मा, अदि मौजूद थे।

'सभी का सम्मान करना चाहिए'

भरतपुर (निस)। कृषि महाविद्यालय भुसावत पर शनिवार को शून्य भेदभाव दिवस के उपलक्ष्य में विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। महाविद्यालय के डीन डॉ उदय भान सिंह ने कहा कि धर्म, जाति, लिंग, क्षेत्र, बीमारी, शारीरिक विकलांगता, पहनावे, रंग आदि के आधार पर मानव से मानव में भेदभाव करना गलत है। कुछ लोग या अतिथि अपना प्रभुत्व कल्पना करने जायें राजनैतिक लाभ लेने के लिए भेदभाव पैदा करते हैं। हमें हर मानव चाहे वह मजदूर, महिला या फिर विधव

में कही भी निवास करता हो, सभी का सम्मान करना चाहिए। डॉ विकास कुमार आर्य ने कहा कि डॉ व्यक्ति को व्यक्तियों का समूह अन्य व्यक्ति को अशुभ मानते हैं, कई औरतो को डायन बताकर उसे प्रताड़ित किया जाता है। ऐसा करना कानूनी अपराध व वैज्ञानिक सोच के विरुद्ध है। डॉ शंकर लाल यादव ने कहा कि सामाजिक या कानूनी रूप से स्वीकृत कोई भी कार्य छोटा या बड़ा नहीं होता, हमें सभी तरह के कार्य करने वाले व्यक्तियों का समान रूप से सम्मान करना चाहिए।

राशिफल रविवार 2 मार्च, 2025



पंडित अनिल शर्मा

फाल्गुन मास, शुक्ल पक्ष, तृतीया तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2081, उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र प्रातः 8:59 तक, शुभ योग दिन 12:39 तक, तैलिल करण दिन 10:36 तक, चन्द्रमा सोमवार प्रातः 6:39 से मेष राशि में संचार करेगा। ग्रह स्थिति: सूर्य-कुम्भ, चन्द्रमा-मीन, मंगल-मिथुन, बुध-मीन, गुरु-वृष, शुक-मीन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में। आज राजयोग सूर्योदय से प्रातः 8:59 तक है। सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से 8:59 तक बना रहेगा। रविवोग सूर्योदय से आरम्भ होगा। आज शुक्र वक्री प्रातः 6:08 पर होगा। आज पंचक है। श्रेष्ठ चौघडिया: चर 8:20 से 9:46 तक, लाभ-अमृत 9:46 से 12:39 तक, शुभ 2:05 से 3:32 तक। राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 6:54, सूर्यास्त 6:24

मेष मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक कार्य योजनानुसार बने लगे। व्यवसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष आज मित्रों/रिश्तेदारों के कारण समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। आज घर-बहुश्रेष्ठ के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

मिथुन आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आवश्यक कार्य के कारण बाहर जाना पड़ सकता है। परिवार में धार्मिक कार्यों पर धन खर्च हो सकता है।

कर्क अपने अति और महत्वपूर्ण आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बने लगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मेघ मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक कार्य योजनानुसार बने लगे। व्यवसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष आज मित्रों/रिश्तेदारों के कारण समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। आज घर-बहुश्रेष्ठ के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

मिथुन आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आवश्यक कार्य के कारण बाहर जाना पड़ सकता है। परिवार में धार्मिक कार्यों पर धन खर्च हो सकता है।

कर्क अपने अति और महत्वपूर्ण आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बने लगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

सिंह नवीन कार्यों के संबंध में सकात्मक आश्वासन प्राप्त होगा। अटके हुए कार्य बने लगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

कन्या अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में परेशानी हो सकती है।

तुला परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृश्चिक घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज विवाहिक मामलों से राहत मिल सकती है।

धनु घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। आज नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है।

मकर घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कुंभ परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन आर्थिक कार्यों से अटके हुए कार्य बने लगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वास्तु सफल रहेगा।